हरिओम मीना

जल, जीवन और जीवनदायिनी गंगा

नदियों के प्रति हमारे पूर्वजों के क्या भाव थे इसको समझने के लिए हम अमृतलाल वेगड़ की 'नर्मदा यात्रा' या 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' को पढ़ सकते हैं। चाहे गंगा हो या नर्मदा हो या अन्य नदियाँ, इनके किनारे भारत की सांस्कृतिक समन्वय के केंद्र हैं। चाहे संगीतकार हो, गीतकार हो, चित्रकार हो, गायक हो, कवि/लेखक हो, जब वह किसी से प्रेम करता है तभी अपना मौलिक नवसृजन दे पाता है, इसी तरह हमें जल से प्रेम करना होगा। वर्षा की बूँद-बूँद को संचित करना होगा। कृषि सिंचाई के तौर-तरीकों में बदलाव लाना ही होगा। अन्यथा हम कुछ वर्षों के पश्चात पीने के पानी के लिए तरस जाएँगे।

नदियाँ सिर्फ जल की धारा नहीं हैं इनके किनारे सभ्यता संस्कृति के उद्गम हैं, वे हमें जीवन देती हैं। चाहे इनके जल से फसलें लहलहाती हों या हमारी प्यास तृप्त होती हो, परंतु हम सिर्फ उन्हें अपना मैलापन देते हैं। हमें समझना होगा कि नदियाँ हमारी जीवन रेखा हैं। इनकी अविरलता में ही निर्मलता है। हमें नदियों को पूजने के तौर-तरीकों में बदलाव करना होगा। इनके किनारों को वृक्ष लगाकर पूजना होगा, संवारना होगा। हमें विचारना चाहिए कि हमारी विगत एवं वर्तमान सरकारों ने गंगा की सफाई के लिए कितना धन खर्च किया, हो रहा है और अभी भी नमामि गंगे परियोजना जारी है। जो नदियों की सफाई के लिए एक एकीकृत योजना है, जिसमें गंगा के साथ ही सहायक नदियाँ व उप-सहायक नदियाँ भी सम्मिलित हैं।

नदियों के प्रति हमारे पूर्वजों के क्या भाव थे इसको समझने के लिए हम अमृतलाल वेगड़ की 'नर्मदा यात्रा' या 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' को पढ़ सकते हैं। चाहे गंगा हो या नर्मदा हो या अन्य नदियाँ, इनके किनारे भारत की सांस्कृतिक समन्वय के केंद्र हैं। चाहे संगीतकार हो, गीतकार हो, चित्रकार हो, गायक हो, कवि/लेखक हो, जब वह किसी से प्रेम करता है तभी अपना मौलिक नवसृजन दे पाता है, इसी तरह हमें जल से प्रेम करना होगा। वर्षा की बूँद-बूँद को संचित करना होगा। कृषि सिंचाई के तौर-तरीकों में बदलाव लाना ही होगा। अन्यथा हम कुछ वर्षों के पश्चात पीने के पानी के लिए तरस जाएँगे। हमारे विकास में अनियंत्रित शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या एक बहुत बड़ी समस्या है। हमारी परियोजनायें ऐसी हों जिसमें हम पेड़ों को बचा सकें और इसका अन्य विकल्प तलाशें। इतनी बड़ी मात्रा में युवा भारत की युवा तरुणाई हैं। क्या हम नए-नए विचार जो धरातल पर क्रियान्वित किए जा सके, उनको इस धरा पर नहीं उतार सकते? औद्योगीकरण और हरित क्रांति में अत्यधिक जल का उपयोग किया गया परंतु अब हमें जल संकट की चुनौती को स्वीकारना होगा क्योंकि बढ़ती आबादी के दैनिक जल उपयोग व औद्योगीकरण द्वारा प्रदूषित जल एक बहुत बड़ी समस्या है। बढ़ती आबादी को रहने के लिए घर तो चाहिए ना, जमीन पर ही घर बना सकते हैं फिलहाल तो। इसके कारण खेती योग्य भूमि घट रही है भारत के पास विश्व की 2.5% भूमि है और आबादी 17% है। आबादी नियंत्रित रहेगी तो इस भूमि को जल संचयन के लिए उपयोग कर सकते हैं। इस आबादी का सबसे अधिक भार भारत की प्रमुख नदी गंगा पर है। गंगाजल से प्रत्यक्ष तौर

पर भारत की आधी आबादी को भोजन प्राप्त होता है और आजीविका भी चलती है।

हम समय के साथ बहुत कम बदले हैं, हमें और बदलना होगा। किसी अंधविश्वास को हमें संस्कार नहीं मानना है, विशेष रूप से उसको जिससे जल प्रदूषित हो या उसमें रहने वाले जीव जंतु को नुकसान पहुँचे। हमें उस विराट जल प्रदूषित संकट को भी देखना होगा जो वर्षों की हमारी रूढ़िवादिता से उपजा है। अंधविश्वासों में हम अपने ही साथ छल कर रहे हैं, अपने को ही नष्ट करने पर आ तुले हैं।

काट दिए जंगल, तो बादल न बरसेंगे
न करेंगे पर्यावरण संरक्षण, तो पानी को भी तरसेंगे।
इतना पतन हमारा होगा, यह अनुमान न था
पहले तो ऐसा अपना हिन्दुस्तान न था।
(बटुक चतुर्वेदी)

क्या हम भविष्य की अर्थव्यवस्था को पर्यावरण के अस्तित्व के साथ गति नहीं दे सकते हैं? हमारे आविष्कार ऐसे हों जिनमें पर्यावरण का सह-अस्तित्व हो, समावेशन हो। अगर ऐसा नहीं हुआ तो हम इस धरा को कितना ही गहरा खोदते जाएँगे, फिर भी जल नहीं निकलेगा।

हल निकलेगा हल निकलेगा अगर
गहरा खोदोगे जल निकलेगा।

शिवकुमार अर्चन की यह पंक्ति हमारे समय में झूठी हो सकती है।

हमें गंगा को बचाना होगा, नर्मदा को बचाना होगा इसी तरह समस्त नदियों को बचाना होगा। हमें जल से प्यार करना होगा और जब हम उससे प्यार करेंगे तो हम उसको सुरक्षित और संरक्षित भी करेंगे। तो आइए इस अभियान में इस कर्तव्य को शिरोधार्य कीजिए, कहीं ऐसा ना हो कि सच में तीसरा विश्वयुद्ध जल के लिए तो होगा ही, परंतु उसके पहले भारत के राज्यों में ही जलीय विवाद अपनी पराकाष्ठा को छू ले। हमें जल संरक्षण के लिए धरा के

कभी हमने सोचा है कि गंगा नहीं रहेगी तो इस भारत का क्या होगा? इसको हम इस तरह समझ सकते हैं कि बरसात के बाद हमारे आस-पास के गाँवों में जो छोटे-छोटे तालाब भर जाते हैं और जो बरसात के दो-तीन महीने बाद सूख जाते हैं तब जल की समस्या कितनी आती है। जब यह जल से भरे रहते हैं तब आस-पास पशु-पक्षी व जलीय जीवों को आश्रय मिलता है या विविधता देखने को मिलती है। हमें यहाँ विविधता बनी रहे इस कर्तव्य को निभाना होगा। पशु-पक्षियों का भी इस धरा पर उतना ही अधिकार है जितना हमारा या कहें उनका हम से अधिक।

अंदर निरंतर प्रवाहमान के लिए अत्यधिक वृक्ष लगाने होंगे, पहाड़ों का मानवीय कटाव/छेड़छाड़ रोकना होगा, नदी के प्राकृतिक बहाव से छेड़छाड़ छोड़नी होगी। बेशकीमती पानी हमें बिना मोल के मिलता है न, इसलिए हम इसकी कीमत नहीं करते जब यह पीने को नहीं मिलेगा तब इसका मोल पता चलेगा-

फिर हम कहेंगे पानी अब कहे लाख
टका मेरा मोल।

कभी हमने सोचा है कि गंगा नहीं रहेगी तो इस भारत का क्या होगा? इसको हम इस तरह समझ सकते हैं कि बरसात के बाद हमारे आसपास के गाँवों में जो छोटे-छोटे तालाब भर जाते हैं और जो बरसात के दो-तीन महीने बाद सूख जाते हैं तब जल की समस्या कितनी आती है। जब यह जल से भरे रहते हैं तब आसपास पशु-पक्षी व जलीय जीवों को आश्रय मिलता है या विविधता देखने को मिलती है। हमें यहाँ विविधता बनी रहे इस कर्तव्य को निभाना होगा। पशु-पक्षियों का भी इस धरा पर उतना ही अधिकार है जितना हमारा या कहें उनका हम से अधिक। गंगा नदी हमारी धरोहर है, माँ है, इसे जीवित माँ की तरह ही संजो कर रखना है, यह हमारी जीवन रेखा है, प्राण-दायिनी ममतामयी माँ है। गंगा रहेगी तो फसलें पैदा होंगी और जब गंगा और फसलें दोनों होंगी तब हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा।

राजेंद्र शर्मा कहते हैं- जल के लिए तो सोचो, कल के लिए सोचो, है प्रश्न कठिन फिर भी हल के लिए सोचो।

गंगा किनारे बसने वाली संस्कृतियों पर गंगा का प्रभाव साफ नजर आता है, वे गंगा से इस तरह हिली-मिली हैं कि उन्हें अलग करके देखना शायद संभव नहीं है, लेकिन इन परंपराओं और संस्कृतियों ने गंगा पर क्या प्रभाव डाला है यह जानना भी जरूरी है। इसका भी हमें विश्लेषण करना चाहिए। आस्था के नाम पर व्यापार, विसर्जन से लेकर मछली व्यवसाय और रेत चुगन जैसे कई विषय हैं, जिनके विकृत स्वरूप का खामियाजा लगातार गंगा को भुगतना पड़ रहा है।

गंगा किनारे बसने वाली संस्कृतियों पर गंगा का प्रभाव साफ नजर आता है।

भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी गंगा जो भारत के उत्तराखंड में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुंदरवन तक विशाल भू-भाग को सींचती है। गंगा नदी देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं जन-जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। सामाजिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण गंगा का यह मैदान अपनी घनी जनसंख्या के कारण भी जाना जाता है। 100 फीट तक की गहराई वाली यह नदी भारत में पवित्र मानी जाती है, भारतीय पुराण और साहित्य में अपने सौंदर्य और महत्व के कारण बार-बार आदर के साथ गंगा की महत्ता बताई गई है। अपनी कई सहायक नदियों सहित गंगा नदी सदियों से भारतीय सभ्यता के बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन का स्रोत रही है। और सभी युगों के दौरान भारतीयों ने विशाल गंगा नदी को देवी एवं उसके प्रवाह को दैवी प्रवाह माना है। भारतीय लोगों के लिए नदियों में सबसे पवित्र गंगा ना सिर्फ नश्वर का शुद्धिकरण करती है बल्कि एक सजीव देवी गंगा माता भी है। भारतीय चेतना में गंगा की असाधारण महत्ता को भगवान श्री कृष्ण द्वारा भगवत गीता में भावपूर्ण शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया गया है-

"पवित्र करने वालों में मैं वायु हूँ,

शस्त्रधारियों में मैं राम हूँ,

जलचरों में मैं मगरमच्छ हूँ, और नदियों में मैं गंगा हूँ।''

गंगा नदी घाटी में सदियों से बहुमूल्य भौतिक संसाधनों और जैविक संसाधनों का गतिशील संतुलन बना हुआ है। **नदी घाटी में जलीय-शृंखलाओं एवं पारिस्थितिकी कड़ियों के द्वारा नदी के जाल में बहुत सारे सतही जल निकाय एवं भूजल आपस में जुड़े हुए हैं।** इस तरह क्रियाशील तौर पर नदी घाटी एक अंतःक्रिया करने वाली प्राकृतिक संसाधन प्रणाली है जिसमें नदी और उसकी घाटी के बीच जटिल जैविक भौतिक संप्रेषण के साथ व्यापक सामग्री आदान-प्रदान होती है और पारिस्थितिकी कड़ियों से ऊर्जा का हस्तांतरण होता है। इस तरह नदी घाटी के संसाधनों में होने वाली गतिमान अंतःक्रिया ना सिर्फ नदी घाटी वरन नदी प्रणाली दोनों की सेहत को संचालित करती है। लेकिन लगातार बदलती हुई मानवीय गतिविधियों और अन्य कारणों ने नदी घाटी की गतिशीलता को नया आयाम प्रदान किया है। इस तरह गंगा नदी प्रणाली की स्थिति का वैज्ञानिक मूल्यांकन नदी प्रणाली एवं नदी घाटी में प्राकृतिक एवं मानव जनित गतिविधियों से इसके संबंध और नदी की दुर्दशा को रोकने या कम करने के लिए अत्यंत जरूरी है। गंगा नदी के जल की गुणवत्ता वर्तमान में चिंताजनक है, जो कि पर्यावरण स्वास्थ्य और जीवन के लिए एक गंभीर चुनौती है। पारंपरिक तौर पर पुराने समय में नदी के जल की गुणवत्ता उसकी जीवनदायी गुणों के लिए उल्लेखनीय थी। इस बात के लिए नियम तय थे कि मनुष्य द्वारा नदी को कैसे उपयोग किया जाए, लेकिन समय बीतने के साथ नियम कमजोर होते गए और नदी का सदुपयोग वस्तुतः दुरुपयोग में बदलता गया। हम सदैव गंगा नदी के लिए अथाह सम्मान रखते हैं और व्यक्त करते हैं, लेकिन हमारे आधुनिक विचारों में गंगा नदी के पर्यावरणीय महत्व का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। अतः जनसाधारण का विश्वास एवं सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से नदी प्रबंधन योजना को आवश्यक जानकारी, प्रमाण एवं नदी के स्वभाव इत्यादि को ध्यान में रखते हुए सभी हितधारकों के साथ विचार-विमर्श करके बनाना चाहिए। गंगा नदी के जल, गाद और अन्य प्राकृतिक घटकों का प्रवाह पूरे वर्ष नदी की पूरी लंबाई में निरंतर और पर्याप्त हो, इसलिए नदी की बाधाओं, पानी के डायवर्जन एवं सतही प्रवाह की बाधाओं को नियंत्रित किया जाना चाहिए। मानव निर्मित प्रदूषण से गंगा नदी के तंत्र का प्रवाह प्रदूषित हुआ है, इसलिए वर्तमान समय में नदी, नालों एवं तालाबों में मानव जनित अपशिष्ट को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में पहुँचने नहीं दिया जाना चाहिए। गंगा नदी प्रणाली प्राचीन काल की धरती की रचना है जिसके नष्ट होने पर क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती है। अतः पूरे नदी घाटी की भूगर्भिक अखंडता को संरक्षित किया जाना चाहिए।

गंगा नदी प्रणाली विभिन्न जीवित प्रजातियों और भौतिक वातावरण के बीच एक संरचित संतुलन है जो हजारों सालों से प्रकृति द्वारा तैयार किया गया है और अपरिवर्तनीय बदलावों के प्रति संवेदनशील है। इसलिए नदी प्रणाली के जैव भौतिक संसाधनों के साथ अतिदोहन और अनावश्यक छेड़-छाड़ रोकने का पूर्ण प्रयास किया जाना चाहिए। समाजसेवी और पर्यावरण की समझ रखने वाले अनुपम मिश्र कहा करते थे कि ''हम अपने जीवनचर्या से धीरे-धीरे ही नदी को खत्म करते हैं और जीवनचर्या से धीरे-धीरे ही उसे बचा सकते हैं।'' किसी भी देश के शहरी विकास की पौराणिकता से आधुनिकता तक का मूल्यांकन करने के लिए भौगोलिक और ऐतिहासिक रूप से वहाँ की प्रमुख नदियों का अध्ययन करना जरूरी है। इसलिए भारत के शहरी विकास की भौगोलिक, इतिहास, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति और कला की समग्रता जानने के लिए गंगा नदी का अध्ययन आवश्यक है। वातावरण में घटते-बढ़ते तापमान को अथवा पर्यावरण की शुद्धि-अशुद्धि को नदी के अध्ययन से समझा जा सकता है। पवित्र एवं प्राचीन गंगा नदी भारतीय इतिहास का एक अभिन्न अंग है, जिसकी पावन उपस्थिति न केवल भूगर्भीय क्षेत्र अपितु देश के सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र तक भी महसूस की जा सकती है।

गंगा नदी प्रणाली विभिन्न जीवित प्रजातियों और भौतिक वातावरण के बीच एक संरचित संतुलन है जो हजारों सालों से प्रकृति द्वारा तैयार किया गया है और अपरिवर्तनीय बदलावों के प्रति संवेदनशील है। इसलिए नदी प्रणाली के जैव भौतिक संसाधनों के साथ अतिदोहन और अनावश्यक छेड़-छाड़ रोकने का पूर्ण प्रयास किया जाना चाहिए।

भारत में गंगा केवल एक नदी नहीं, अपितु माता स्वरुप में विराजमान है, इसी कारण इसे गंगा माँ या गंगा मैया भी कहा जाता है। भारतीयों की अंतरात्मा गंगा देश की आधी से ज्यादा आबादी को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पेयजल उपलब्ध कराती है। साथ ही कृषि आवश्यकताओं के लिए भी बड़ी जनसंख्या गंगा नदी पर निर्भर है। बात यदि गंगा की हो तो भारत एक स्वर में ही बोलता प्रतीत होता है। देश का प्रत्येक क्षेत्र जहाँ से गंगा बहती है, एक विशाल सांस्कृतिक और धार्मिक अर्थ लिए हर सम्प्रदाय को दृढ़ संकल्प के साथ जोड़कर चलती है। परंतु आज गंगा स्वयं के स्वरूप के लिए अपने ही लोगों के सामने दयनीयता के साथ मलिन होती दिख रही है। आज गंगा को अपने स्वयं के लोगों द्वारा दी गई दिव्य प्रतिष्ठा से खतरा उत्पन्न हो गया है। हर साल लाखों श्रद्धालु संगम, कुंभ मेला जैसे विभिन्न उत्सवों में भाग लेने के लिए नदी के तट पर एकत्र होते हैं। लोगों के इस सामूहिक एकत्रीकरण का नदी के पारिस्थितिक तंत्र के साथ-साथ पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पिछले कुछ वर्षों में नदियों की जीवनरेखा माने जाने वाले ग्लेशियर सैकड़ों फीट से कम हो रहे हैं और हिमालय क्षेत्र के औसत हिमपात में गिरावट से नदियों के जलस्तर में गिरावट दर्ज की गयी है। नदी को अर्पित किया गया सम्मान उन अनुष्ठानों तक ही सीमित है, जहाँ गंगा माँ पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के बारे में सोचे विचारे बिना केवल स्वार्थ के वशीभूत होकर परम्पराओं का वहन किया जाता है। गंगा बेसिन के साथ भी यही उदासीनता स्पष्ट है, जहाँ अनुमान लगाया गया है कि लगभग पैंतीस करोड़ (350 मिलियन) लोग नदी तटों पर निवास करते हैं। जैसे-जैसे नदी जल कई कस्बों और शहरों के माध्यम से बहता है, असंशोधित मानव मल, पशु और औद्योगिक कचरे को नदी में बहाया जाता है। कानपुर में उदाहरण के लिए, आस-पास के चमड़े के उद्योगों से क्रोमियम और अन्य हानिकारक रसायनों को अप्रतिबंधित रूप से नदी में बहाया जाता है। गंगा बेसिन क्षेत्रों के आस-पास भूजल प्रदूषण में वृद्धि साबित करती है कि किस प्रकार जलजनित बीमारी के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। कई नदी स्नान क्षेत्रों में मलीय कोलिफार्म प्रदूषण स्तर, मानक स्तर से कहीं अधिक तकरीबन 3,000 गुना पाया गया। विघटित लाशें जिनका उचित रूप से संस्कार नहीं किया जाता है, उन्हें भी नदी में ऐसे ही छोड़ दिया जाता है, जिससे ना केवल पवित्र जल प्रदूषित होता है बल्कि समुद्री और मानव जीवन के लिए भी

खतरा उत्पन्न होता है। भारत की प्राचीनतम एवं अत्यंत पूजनीय नदियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गंगा नदी है, जिसे सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं आर्थिक संसाधन के रूप में अग्रणी माना गया है एवं इसी कारण गंगा नदी को 2008 में भारत की राष्ट्रीय नदी भी घोषित किया जा चुका है। लगभग 10 लाख किमी के विशाल भू-भाग को सींचकर यह पावन सरिता गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन के मैदानों की जनसंख्या का पोषण करती है। भारतीय पुराण और साहित्य में अपने सौन्दर्य और महत्व के कारण बार-बार आदर के साथ वंदित गंगा उत्तराखंड के पथरीले मार्गों से यात्रा करते हुए उत्तरी भारत के मैदानों को सींच कर सुंदरवन के उपजाऊ डेल्टा का निर्माण करते हुए बंगाल की खाड़ी में सम्मिलित हो जाती है। बंगाल की खाड़ी में संगम से पहले गंगा विश्व के सबसे बड़े एवं उपजाऊ सुंदरवन डेल्टा का निर्माण करती है, यह डेल्टा गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई नवीन जलोढ़ से हजार वर्षों में निर्मित समतल तथा निम्न मैदान है। सागर की ओर निरंतर विस्तृत डेल्टा प्रगतिशील डेल्टा के नाम से जाना जाता है। सुंदरवन डेल्टा में भूमि का ढाल अत्यंत कम होने के कारण यहाँ गंगा अत्यन्त धीमी गति से बहती है और अपने साथ लायी गयी मिट्टी को मुहाने पर जमा कर देती है, जिससे डेल्टा का आकार सतत बढ़ता चला जाता है और नदी की कई धाराएँ, उपधाराओं में विभाजित होकर इच्छामती नदी, विद्याधरी नदी, कालिंदी नदी आदि के रूप में प्रवाहित होती है। इस प्रकार गंगा अपनी अद्भुत यात्रा से ना केवल एक बड़ी जनसंख्या अपितु जलीय जीवन को भी पोषण देते हुए भारत, बांग्लादेश व नेपाल की जीवन रेखा के रूप में जानी जाती है।

गंगा आज विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में से एक है। वह गंगा जो भारत की सभ्यता को हजारों वर्षों से संरक्षित कर रही थी, आज स्वयं संरक्षण की कगार पर खड़ी होकर अपने अस्तित्व को बचाए रखने की गुहार लगा रही है। विकास के नाम पर गंगा जैसी पवित्र नदियों की अविरलता और निर्मलता को नष्ट कर देने की हमारी मानसिकता, अत्यधिक पर्यटन विकास के चलते हमें ज्यादा बिजली, होटल, सड़क, परिवहन चाहिए और इन सभी से गंगा एंव हिमालय के नाजुक पारिस्थितक तंत्र पर बहुत ही विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

गंगा नदी का सांस्कृतिक महत्व

कृषि, उद्योगों, धार्मिक पर्वों एवं पर्यटन के विकास में गंगा नदी का महत्व बहुत अधिक है। गंगा तटों पर स्थापित अनगिनत धार्मिक स्थल एवं तीर्थ स्थान जैसे गंगोत्री, ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज, वाराणसी (काशी), गंगासागर आदि भारत की सांस्कृतिक परम्परा को केवल देश ही नहीं विदेशों में भी बनाए हुए है। दुर्लभ जलीय जीवन, वनस्पतियों व खनिजों से भरपूर गंगा नदी में एक विशेष प्रकार का विषाणु बैक्टेरियोफेज पाया जाता है, जो जल में जन्य विषैले सूक्ष्मजीवों को समाप्त करने में सहायक सिद्ध होता है। गंगा घाटी में अद्भूत सभ्यता का उद्भव और विकास हुआ है, जहाँ वैदिक ज्ञान, धर्म, आध्यात्म व वैभवशाली सभ्यता-संस्कृति की छवि का अवलोकन होता है। रामायण एवं महाभारत के पवित्र श्लोकों को माँ गंगा ने अपने तटों पर उच्चरित होते सुना है। इसके उपजाऊ मैदानों ने मगध एवं मौर्य शासन जैसे अनगिनत कालखंडों को अपने किनारों पर पोषित होते हुए देखा है।

कई कस्बों और शहरों में असंशोधित मानव मल, पशु और औद्योगिक कचरे को गंगा नदी में बहाया जा रहा है।

आज की गंगा

गंगा आज विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में से एक है। वह गंगा जो भारत की सभ्यता को हजारों वर्षों से संरक्षित कर रही थी, आज स्वयं संरक्षण की कगार पर खड़ी होकर अपने अस्तित्व को बचाए रखने की गुहार लगा रही है। विकास के नाम पर गंगा जैसी पवित्र नदियों की अविरलता और निर्मलता को नष्ट कर देने की हमारी मानसिकता, अत्यधिक पर्यटन विकास के चलते हमें ज्यादा बिजली, होटल, सड़क, परिवहन चाहिए और इन सभी से गंगा एंव हिमालय के नाजुक पारिस्थितक तंत्र पर बहुत ही विपरीत प्रभाव पड़ेगा, जिसकी भरपाई हम राजस्व-लाभ से कभी नहीं कर सकते हैं। सदियों से बहती हुई, अथाह प्रेरणा-स्रोत गंगाधारा की गरिमा एवं पवित्रता को क्या हम केवल पैसे (आज के विकास से) से माप सकते हैं? नदियाँ हमारी सृष्टि की रचना चिन्ह हैं- लाखों-हजारों साल पुरानी। गंगा नदी उतनी ही प्राचीन है जितनी वह भूमि, जिसे वह सींचती है। किस प्रकार अंध-नवीनीकरण के दौर ने, अतिस्वार्थ की इच्छाओं ने हमारी सांस्कृतिक गरिमा का विशेष प्रतिरूप, हमारी नदियों, के साथ खिलवाड़ किया है। भारतीय नदियों से उनकी प्राकृतिक संपत्ति छीनकर हमने उन्हें केवल मलिन ही नहीं, अपितु सम्पन्नता विहीन भी बना दिया है। माँ गंगा की रक्षा हमारी अस्मिता की रक्षा है। कितने लोग इसे समझ पा रहे हैं कि माँ गंगा का अविरल व निर्मल प्रवाह समग्रता में बना रहे। भौतिक दृष्टि या उपभोक्ता दृष्टि के कारण हम सब महसूस नहीं कर पा रहे हैं - गंगा को मात्र एक भौतिक नदी समझ बैठे हैं। नदियाँ, चाहे वह गंगा हो या गंगा में मिलने वाली अन्य सहायक नदियाँ, सभी ने माँ की तरह पोषण और संरक्षण का कार्य किया है। यह संबंध शायद इसी भारतवर्ष के मनीषियों, ऋषियों ने अनुभूत किया। आज हम सब उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। भारत की सभी नदियाँ प्रदूषण, शोषण और अतिक्रमण से पीड़ित हैं। जब तक गंगा जल गोमुख से गंगा सागर तक गंगा में नहीं बहेगा तब तक गंगा कैसे निर्मल होगी? गंगा की अविरलता, निर्मलता या समग्रता का प्रश्न तो दूर, हम व्यक्तिवादी अतिरेक से लिप्त होकर विकास की नई परिभाषा गढ़ रहे हैं, जिसके मूल्य व्यक्तिवादी और निजी उपलब्धियों को महत्व देने वाले हैं। विकास की इन नवमान्यताओं के साथ गंगा विरोधी घोर-व्यक्तिवादी समाज का ही मेल खा सकता है। तभी तो हम वैयक्तिक विकास के नाम पर अपनी युगों पुरानी सभ्यताओं के महत्व को भूलकर अपनी ही नदियों के जीवन चक्र का विनाश करने पर आमादा हैं। भारत का

अस्तित्व गंगा के अस्तित्व से है, जिसके धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व पर कोटि-कोटि भारतीय विश्वास करते हैं। गंगा में प्रतिदिन एक अरब लीटर मल-मूत्र और औद्योगिक अपशिष्ट बहाया जाना पवित्रता के साथ आस्था को समाप्त करने की प्रकिया है। नैसर्गिक विरासत, ऋषि-मुनियों, ज्ञानी-महर्षियों की तपस्थली व कर्मभूमि, सनातन धर्म, प्राचीन दर्शन आदि हमें विरासत में मिला। जो सबसे श्रद्धेय है, उसका हम सबसे ज्यादा पोषण कर रहे हैं- सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए। केवल अपने स्वार्थ के लिए हम नदी को नैसर्गिक क्षमता से अधिक प्रदूषित कर विरासत में मिली नदी संस्कृति को ध्वस्त करने पर तुले हैं। महान नदियाँ महान सभ्याताओं को जन्म देती हैं। मानव-विकास की समस्त महत्वपूर्ण सभ्यताएँ किसी-न-किसी नदी के तट पर ही पली-बढ़ी हैं। गंगा नदी सिर्फ एक नदी नहीं है, वरन एक विशाल संस्कृति की जननी भी है। आज अति प्रदूषण के कारण गंगा से दुर्लभ जलचर, वनस्पति

आज प्रदूषण के कारण गंगा से अतिदुर्लभ जलचर गायब होते जा रहे हैं।

गायब होते जा रहे हैं, उसी प्रकार कभी गंगा को अपने जीवन से भी अधिक प्रिय मानने वाले गंगा-पुत्र तथा गंगा-भक्त भी आज लुप्तप्राय प्रजाति का हिस्सा बनते जा रहे हैं। हमने नदियों के सम्मान में स्तुति गान और आरती तो खूब किए पर उसके अस्तित्व की रक्षा के लिए जरूरी कार्य को लेकर धीरे-धीरे संज्ञा-शून्य व उदासीन होते गए।

गंगा और सिनेमा

गंगा और सिनेमा दोनों का परिदृश्य समयानुसार बदलता रहा है। गंगा की निर्मलता जिस तरह से शहरी और आधुनिक परिवेश की वजह से निरंतर प्रदूषित होती रही है, वैसे ही सिनेमा के विषय और शिल्प में बदलाव आता रहा है। सिनेमा और गंगा के बदलाव को सिनेमाई शिल्प के जरिए समझने के लिए राज कपूर साहब की दो अलग-अलग समय में बनाई हुई फिल्म के नाम का इस्तेमाल करना बेहतर होगा। 1960 में प्रदर्शित फिल्म ''जिस देश में गंगा बहती है'' और 1985 में प्रदर्षित फिल्म ''राम तेरी गंगा मैली'' के बीच में जो बदलाव गंगा की निर्मलता में आया, वैचारिक रूप से वो इन दोनों सिनेमा के नाम से समझा जा सकता है। राधू करमाकर द्वारा निर्देशित और राज कपूर द्वारा निर्मित फिल्म ''जिस देश में गंगा बहती है'' 1960 में प्रदर्शित हुई थी। उस समय तक गंगा की धारा भी निर्मल थी और उसमें प्रदूषण की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी इसलिए सच्चाई और निष्ठा के प्रतीक के रूप में गंगा का प्रयोग होता था। इसलिए इस फिल्म की शुरुआत ही पहाड़ की निर्मल और चंचल गंगा से होती है। जो बनारस तक आकर शांत और गंभीर हो जाती है। इस फिल्म में दृष्टिगत और वैचारिक दोनों स्तर पर गंगा को निर्मल और पावन बताया गया है। जो उस समय गंगा का वास्तविक सच था। फिल्म का मुख्य पात्र राजू जो निहायत ही मासूम है वो अपना परिचय यही देता है। जहाँ गंगा बहती है मैं वहाँ का वासी हूँ। इस फिल्म में उसके स्वभाव की निर्मलता बिल्कुल गंगा जैसी है, जो दुर्जन डाकुओं के साथ रहकर भी अपनी सज्जनता नहीं खोता है और अंत में अपने सान्निध्य में उन डाकुओं को भी निर्मल कर देता है। राजू का बार-बार ये कहना की गंगाजी की कसम खा कर कोई झूठ नहीं बोल सकता है, सीधे तौर पर जन-मानस में खुद को स्थापित करता है और तत्कालीन दौर में गंगा का वास्तविक सच यही था।

कितना भी मैल धोया जाए गंगा निर्मल ही रहेगी। अपने सान्निध्य में आए सभी पाप को धोने की शक्ति गंगा में है और यही पौराणिक कथानक इस फिल्म की सांकेतिक कहानी थी। ये वो दौर था जहाँ एक तरफ निर्मल गंगा बह रही थी, समाज और जीवनशैली में सहजता थी। हमारा सिनेमा हमारी राजनीति से कहीं आगे था जिसने 1960 और 1985 के दौर में ही ऐसी फिल्में बना दी जो समाज को सोचने पर विवश करती है। जिसने गंगा की पवित्रता भी देखी और गंगा की गंदगी भी देखी दोनों नजरिए उसके पास थे और इसमें सबसे बड़ा योगदान राज कपूर का है। ''जिस देश में गंगा बहती है'' फिल्म में जिन्होंने राजू का पात्र किया उन्होंने ही ''राम तेरी गंगा मैली'' का निर्माण किया। और उनका कहना था कि एक में गंगा की सफाई और सच्चाई है तो दूसरी में उसके पूर्ण विपरीत की कहानी है। राज कपूर द्वारा निर्देशित फिल्म ''राम तेरी गंगा मैली'' 1985 जिसने कई स्थापित तथाकथित मान्यताओं को तोड़ा। तथाकथित सभ्य समाज ने राज कपूर पर भारतीय सिनेमा को प्रदूषित करने का आरोप तक लगाया, जिसे गंगा का वास्तविक प्रदूषण नहीं दिख रहा था। ''जिस देश में गंगा बहती है'' के राजू की तरह इस फिल्म में पात्र को गंगा का चरित्र दिया है लेकिन विषय वस्तु अलग है क्योंकि गंगा का स्वरुप भी अब तक बदल चुका है। फिल्म की शुरुआत में ही ब्रजकिशोर (ए. के.हंगल) अपने भाषण के द्वारा गंगा प्रदूषण की बात कहते हैं, और लोगों को राजनेताओं की करतूतों से अवगत कराते हैं। फिल्म के टाइटल गीत को लेकर भी राज कपूर बहुत सजग थे। रविन्द्र जैन साहब को बुला कर उन्होंने विमर्श भी किया कि मैं पहले भी गंगा पर टाइटल गीत बना चूका हूँ लेकिन तब मैंने सफाई और सच्चाई के साथ गंगा का नाम लिया था लेकिन इस बार गंगा के मैली होने की बात कह रहा हूँ। गीत-संगीत ऐसा हो कि मेरी बात सही रूप में दर्शक तक पहुँच सके और तब शीर्षक गीत कुछ इस तरह बना-

उत्तर में बहती है कैसी निर्मल धारा, पूरब में रंग बदल गया हुआ जल भी खारा।

रामकृष्ण को तोतापूरी ने ताना मारा, राम तेरी गंगा मैली राम तेरी गंगा मैली

गरीब देशों में पानी सबसे महंगा, गरीब देश पानी पर ज्यादा पैसा खर्च कर रहे हैं। भारतीय आय का 6 प्रतिशत पानी पर खर्च कर रहे हैं, जबकि अमेरिकी 1 प्रतिशत। कुछ देशों में लोग कमाई का 50 प्रतिशत तक पानी पर खर्च कर रहे हैं। जो देश आय का 25 से 50 प्रतिशत पानी पर खर्च कर रहे हैं, उनमें पापुआ न्यू गिनी 54 प्रतिशत, मेडागास्कर 45 प्रतिशत, इथोपिया 40 प्रतिशत, कंबोडिया 28 प्रतिशत, घाना 25 प्रतिशत खर्च कर रहे हैं।

पानी बेशकीमती है, इसे बचाइए!

पानी हमारी पहुँच से दूर होता जा रहा है। कुछ आंकड़ों को पढ़कर हम एहसास कर सकते हैं कि पानी कितना बेशकीमती है। 400 करोड़ लोग यानी हर दूसरा शख्स साल में कम से कम 30 दिन पानी की कमी का सामना कर रहा है। हर दिन 1000 बच्चों की मौत दुनिया में दूषित पानी व साफ-सफाई संबंधित बीमारी से होती है।

पानी का 60 हजार रुपए सालाना बिल चुकाते हैं अमेरिकी परिवार। कैलिफोर्निया में हर महीने 81 हजार रुपए तक आता है पानी का बिल। कैलिफोर्निया में लोगों को 60 हजार गैलन पानी के लिए हर माह 81212 रुपए चुकाने पड़ रहे हैं। अमेरिका में 10 साल में पानी के दाम में 50 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है। यह बढ़ोतरी बिजली व प्राकृतिक गैस के दामों से ज्यादा है।

दक्षिण अफ्रीका के 60 प्रतिशत घरों में पानी की सप्लाई नियमित नहीं होती, दो-तीन दिन के अंतराल पर होती है।

गरीब देशों में पानी सबसे महंगा, गरीब देश पानी पर ज्यादा पैसा खर्च कर रहे हैं। भारतीय आय का 6 प्रतिशत पानी पर खर्च कर रहे हैं, जबकि अमेरिकी 1 प्रतिशत। कुछ देशों में लोग कमाई का 50 प्रतिशत तक पानी पर खर्च कर रहे हैं। जो देश आय का 25 से 50 प्रतिशत पानी पर खर्च कर रहे हैं, उनमें पापुआ न्यू गिनी 54 प्रतिशत, मेडागास्कर 45 प्रतिशत, इथोपिया 40 प्रतिशत, कंबोडिया 28 प्रतिशत, घाना 25 प्रतिशत खर्च कर रहे हैं। इथोपिया में पानी की होम डिलीवरी करवाने पर 10 गुना तक पैसा देना पड़ता है। नार्वे के ओस्लो में दुनिया का सबसे महंगा बोतलबंद पानी मिलता है। यहां 120 प्रमुख पर्यटन शहरों की तुलना में पानी के दाम 3 गुना है। इसके बाद तेल अवीव, न्यूयॉर्क, स्टाकहोम, हेलसिंकी, लॉस एंजलिस, फीनिक्स, सैन फ्रांसिस्को हैं। 2025 तक बोतलबंद पानी का बिजनेस करीब 22 हजार करोड़ रुपए का होगा। आमतौर पर एक नल एक मिनट खुला रखने से 5 लीटर पानी बर्बाद होता है और शॉवर से एक मिनट में 10 लीटर। टॉयलेट में फ्लश चलाने पर 15 लीटर पानी बर्बाद होता है। तीन से पाँच मिनट ब्रश करते समय 25 लीटर, 15 से 20 मिनट के शॉवर में 50 लीटर और बर्तन धोते हुए नल खुला रखने पर 20 से 40 लीटर पानी बर्बाद होता है।

हम अक्सर भूल जाते हैं कि धरती पर पानी का चक्र और हमारी जिंदगी का चक्र आपस में जुड़े हुए हैं। जहाँ पानी अधिक है वहाँ खुशी और समृद्धि भी अधिक है। बायोलॉजिस्ट वॉलेज जे निकोलस की किताब 'ब्लू माइंड' के अनुसार जो लोग जल संरचनाओं के आस-पास रहते हैं, वे ज्यादा खुश रहते हैं। शोध यह भी बताते हैं कि रोजाना 10 गिलास पानी पीने वाले लोग ज्यादा खुश रहते हैं। बच्चे ज्यादा पानी पीते हैं इसलिए बहुत खुश रहते हैं। भारत के महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले में एक गाँव है जिसका नाम हिवरे बाजार है। आई.आई.टी. रुड़की की रिसर्च के अनुसार यहाँ 300 परिवारों में करीब 1600 लोग रहते हैं। 30 साल पहले यह गाँव भीषण सूखे और पलायन की चपेट में था। गाँव की 800 हेक्टेयर में से सिर्फ 12 प्रतिशत भूमि ही सिंचित बची थी। 180 परिवार गरीबी की रेखा के नीचे जीवन गुजार रहे थे। लेकिन फिर गाँव वालों ने पानी बचाने की मुहिम शुरू की और आज हिवरे बाजार देश का सबसे अमीर गाँव बन गया है। इस छोटे से गाँव में 52 मिट्टी के, 32 पत्थर के बांध और 9 चेक डैम हैं। बारिश का पानी रोकने के लिए पहाड़ियों पर 40 हजार से अधिक गड्ढे खोदे गये हैं। इसलिए मई-जून में भी भूजल स्तर 35 से 40 फीट पर रहता है। तालाबों में भी पूरे साल पानी रहता है। हर किसान साल में तीन फसल ले रहा है। 90 के दशक में

गांव वालों ने पानी बचाने की मुहिम शुरू की और आज हिवरे बाजार देश का सबसे अमीर गांव बन गया है।

यहाँ रोजाना 150 लीटर दूध होता था, जो बढ़कर 4000 लीटर प्रतिदिन हो गया है। बदलाव के पीछे गाँव द्वारा ली गई तीन शपथ हैं। पहली- बोरवेल से खेती नहीं करेंगे। दूसरी-कम पानी वाली फसल लेंगे। तीसरी-पेड़ नहीं काटेंगे। 300 रुपए प्रति व्यक्ति आय थी 30 साल पहले इस गाँव की, अब 30 हजार रुपए है। जहाँ पर्याप्त मात्रा में पानी व उसका अच्छा प्रबंधन है, वे स्थान समृद्ध होते हैं। दुनिया में हर 4 में से 3 नौकरी पानी से जुड़ी हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की वर्कफोर्स का 78 प्रतिशत हिस्सा पानी पर निर्भर है। भारत में 40 अरब लीटर साफ पानी की माँग है। इस माँग की पूर्ति के लिए हमें पानी की बचत अभी से करनी होगी। चेन्नई सर्वाधिक बारिश वाले शहरों में सम्मिलित होने के बाद भी सबसे सूखा शहर है। चेन्नई शहर में भूजल स्तर 200 से 300 फीट नीचे तक पहुँच गया है। भारत 10 साल पहले ही भीषण जल संकट की स्थिति में पहुँच चुका है। अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुसार प्रति व्यक्ति पानी की 1700 घन मीटर से कम उपलब्धता वाले देश जल दबाव वाले कहे जाते हैं। देश में प्रति व्यक्ति 1486 घन मीटर पानी सालाना उपलब्ध है। हम इस स्तर से 2011 में ही पिछड़ चुके हैं। इस स्थिति की बड़ी वजह यह है कि हम भू-जल खर्च करने में दुनिया में सबसे आगे हैं। 92 प्रतिशत भू-जल का इस्तेमाल हम सर्वाधिक खेती के लिए कर रहे हैं। 5 प्रतिशत औद्योगिक, 3 प्रतिशत घरेलू इस्तेमाल में हो रहा है। हमारे पास 1869 बिलियन घन मीटर पानी देश में है। इसका बड़ा हिस्सा भौगोलिक कारणों से उपयोग नहीं हो सकता। 1061 बिलियन घन मीटर सतही जल और भू-जल हम भारतीय हर साल इस्तेमाल कर रहे हैं। 10 साल पहले देश में लगभग 15 हजार नदियाँ थी, पर 4500 नदियाँ सूख कर अब सिर्फ बरसाती नदियाँ रह गई हैं। 2001 में 1820 घन मीटर पानी उपलब्ध था, वहीं 2011 में 1545 घन मीटर और आज 2021 में 1486 घन मीटर पानी सालाना उपलब्ध है, जो कि प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 1700 घन मीटर पानी मिलना चाहिए। 2025 तक यह 1340 घन मीटर तक चला जाएगा और 2030 तक 1140 घन मीटर तक, इससे स्थिति का गंभीर अंदाजा हम लगा सकते हैं।

संपर्क करें:
हरिओम मीना
बरकतउल्ला
विश्वविद्यालय, भोपाल
मो. 9617560884